कहानी माला-45-46
अंताक्षरी
सूदखोर का कुबड़

सूदखोर का कूबड़

[नोट : कहानी के यह हिस्से "दास्ताने नसरूद्दीन" नामक पुस्तक से लिये गये हैं : लेखक : लियोनिद सोलोवयेव; अनुवादक : कृष्णकुमार]

सूदखोर जाफर के मकान में सोने से भरे, मुहरबन्द, बारह मर्तबान थे। लेकिन उसकी हवस थी कि कम से कम बीस मर्तबान हों, तकदीर से उसे शक्ल ऐसी मिली थी कि उसकी बेईमानी और उसका लालच उसकी शक्ल पर साफ झलक आते थे। जो लोग गैर-तजरबेकार, सीधे-सादे और भलेमानस थे, वे भी उससे दूर भागते थे। उसके लिए नये शिकार फांसना बहुत मुश्किल था। इसीलिए, उसके मर्तबान बहुत धीमी रफ्तार से भर

रहे थे।

लम्बी सांस लेकर वह सोचता : "काश ! मैं अपने कूबड़ से नजात पा जाता। तब लोग मुझे देखकर भागने न लगते। मेरी चालबाजी भांपे बिना वे मेरा भरोसा कर लेते। ओह, तब उन्हें फंसाना कितना आसान होता ! कितनी जल्दी मेरी आमदनी बढ़ती!"

शहर में जब यह अफवाह फैली कि अमीर के नये आलिम मौलाना हुसैन बढ़िया इलाज जानते हैं, तो सूदखोर जाफर ने बहुत उम्दा सौगातों से एक टोकरी भरी और महल जा पहुंचा।

टोकरी का सामान देखकर अर्सला बेग ने मदद करने की पूरी रजामन्दी जाहिर की।

अमीर ने सूदखोर की बात सुनी, सोने की हाथीदांत-जड़ी शतरंज भेंट कुबूल की और नये आलिम मौलाना हुसैन को हुक्म दिया : " मौलाना हुसैन ! यह सख्स सूदखोर जाफर है। यह हमारा वफादार गुलाम है और इसने हमारी कई खिदमतें की हैं। तुम फौरन इसका लंगड़ापन, कूबड़ापन, कानापन व दूसरे नुक्सों को दूर कर दो।"

यह हुक्म सुनाकर अमीर फौरन चल दिये—मानो यह दिखाने के लिए कि इस हुक्म के खिलाफ वह कोई बात सुनने को तैयार नहीं। सिर झुकाकर खोजा नसरुद्दीन ने आदाब बजाया और वह भी चल दिया। उसके पीछे-पीछे अपना कूबड़ घसीटता हुआ सूदखोर भी कछुए की तरह चलने लगा।

"ऐ हजरत मौलाना हुसैन साहब ! हम लोग जरा जल्दी चलें," नकली दाढ़ीवाले खोजा नसरुद्दीन को न पहचानकर सूदखोर बोला, "क्योंकि अभी सूरज नहीं ढला है और मैं रात होने से पहले ठीक हो जाऊंगा...। जैसा कि आपने सुना, अमीर ने आपको हुक्म दिया है कि आप मुझे फौरन चंगा कर दें।"

एकाएक वह रुक गया : "लगता है मेरी कसम पूरी होने का वक्त आ गया है।"

फौरन उसने एक चाल सोची और हर पहलू से उसे ठोंक-बजाकर देखा। मन ही मन उसने कहा : "हां, वक्त आ गया है ! गरीबों को सतानेवाले ऐ बेरहम सूदखोर ! तू आज ही डूबकर मरेगा।"

वह दूसरी तरफ ताकने लगा ताकि सूदखोर उसकी काली आंखों की चमक न देख सके।

वे लोग अब एक गली में मुड़े जहां हवा रेत के बगूले उठा रही थी। सूदखोर ने अपने घर का चोर दरवाजा खोला। सहन के दूसरे सिरे पर, एक नीची बाड़ के पीछे, जहां से जनानखाना शुरू होता था, खोजा नसरुद्दीन ने हरे पत्तों और शाखों के पीछे हलकी आवाज व हंसी सुनी और कुछ हिलते हुए देखा। सूदखोर रुक गया और उन लोगों की तरफ घूरकर देखा। खामोशी छा गयी।

खोजा नसरुद्दीन ने मन ही मन कहा : "ऐ हसीन कैदियो ! मैं आज तुम्हें नजात दिला दूंगा।"

जिस कमरे में सूदखोर खोजा नसरुद्दीन को ले गया, उसमें

एक भी खिड़की नहीं थी और दरवाजे में तीन ताले और कई सांकलें लगी हुई थीं, जिन्हें खोलने का राज सिर्फ सूदखोर को ही मालूम था। उसे काफी देर मेहनत करनी पड़ी, तब कहीं जाकर दरवाजा खुला।

यहीं वह अपने सोने से अटे मर्तबान रखता था। तहखाने के दरवाजे पर लगे तख्तों पर ही वह सोता था।

"कपड़े उतारो !" खोजा नसरुद्दीन ने हुक्म दिया।

सूदखोर ने कपड़े उतार दिये। नंगा होकर वह बेहद भद्दा और बदनुमा लगता था। खोजा नसरुद्दीन ने दरवाजा बन्द किया और दुआएं पढ़नी शुरू कीं।

इसी बीच जाफर के बेशुमार रिश्तेदार आ-आकर सहन में

इकट्ठे होने लगे। उनमें से कई पर जाफ़र का कर्ज था। वे उम्मीद कर रहे थे कि इस मुबारक मौके की यादगार में वह इन कर्जों को माफ कर देगा। लेकिन उनकी उम्मीदें गलत थीं। बन्द कमरे के बाहर अपने कर्जदारों की आवाजें सुनकर शैतान जाफर खुशी से फूल उठा।

उसने सोचा : "आज मैं इन लोगों से कह दूंगा कि मैंने कर्ज माफ किया, लेकिन रसीदें इन्हें वापस नहीं करूंगा। चकमे में आकर ये लोग कर्ज चुकाने में लापरवाही बरतने लगेंगे। मैं कुछ कहूंगा नहीं। बस, चुपचाप कर्ज का हिसाब रखूंगा। और जब एक-एक टके पर दस-दस टके सूद हो जायगा और कुछ रकम उनके मकानों, बागीचों और अंगूर के बागों की कीमत से ज्यादा हो

जायगी, तो मैं काजी को बुलाऊंगा और अपना वादा भूल जाऊंगा। रसीदें पेश कर दूंगा, उनकी जायदादें बेच लूंगा, फिर उन्हें फकीर बना दूंगा और अपना एक और मर्तबान सोने से भर लूंगा !"

खोजा नसरुद्दीन बोला : "चलो जाफर ! अब हम लोग तुरखान के पाक तालाब चलेंगे, जहां तुम पाक पानी में नहाओगे। इलाज के लिए यह निहायत जरूरी है।"

"तुरखान के पाक तालाब ?" सूदखोर बदहवासी से चिल्ला उठा। "एक मर्तबा मैं उसमें डूबते-डूबते बचा। ऐ मौलाना हुसैन ! आपको मालूम हो कि मैं तैरना नहीं जानता।"

"कोई बात नहीं ! तालाब जाते वक्त तुम्हें बराबर दुआएं पढ़नी होंगी और दुनियाबी चीजों से बिलकुल बेखबर हो जाना होगा।

साथ में तुम्हें सोने के सिक्कों से भरी एक थैली भी ले चलनी होगी ताकि रास्ते में जो भी मिले उसे तुम एक-एक सिक्का दे सको।"

सूदखोर ने सर्द आह भरी और कराहा। रास्ते में उन दोनों को कारीगर, भिखमंगे, हर किस्म के लोग मिले। हालांकि ऐसा करने में उसका दिल टूट रहा था तो भी हर एक को सूदखोर ने सोने का एक-एक सिक्का दिया। रिश्तेदार पीछे-पीछे आ रहे थे। खोजा नसरुद्दीन ने जान-बूझकर उन लोगों को साथ ले लिया था, ताकि सूदखोर को डूबो देने की तोहमत उस पर न लगे।

सूरज छतों के पीछे छिप रहा था। पेड़ों की छाया तालाब पर पड़ रही थी। मच्छर हवा में भनभना रहे थे।

जाफर ने कपड़े उतारे और पानी की तरफ बढ़ा।

शिकायती लहजे में वह बोला : "पानी यहां बहुत गहरा है, मौलाना हुसैन ! आप भूले तो नहीं—मैं तैरना नहीं जानता।"

रिश्तेदार खामोश खड़े देख रहे थे। शर्म से अपने हाथों से अपना जिस्म छिपाता हुआ, डर से दुबकता हुआ सूदखोर; तालाब के चारों तरफ कोई छिछली जगह ढूंढ़ रहा था। एक जगह वह बैठ गया। ऊपर से लटकती टहनियों को थामकर, डरते-डरते, अपने एक पैर का पंजा उसने पानी में डाला।

"बाबा रे ! यह तो बहुत ठंडा है !" वह बड़बड़ाया। घबराहट के मारे उसकी आंखें बाहर निकली जा रही थीं।

नजर बचाते हुए खोजा नसरुद्दीन बोला : "तुम वक्त खराब कर रहे हो, जाफर।" वह अपना दिल कड़ा कर रहा

था ताकि गलत मौके पर रहम उस पर हावी न हो जाय। उसने उन सब लोगों की तकलीफों के बारे में सोचना शुरू किया, जिन्हें जाफर ने बरबाद कर दिया था। बीमार बच्चे के सूखे होंठ ... बूढ़े नयाज के आंसू ... !

उसका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा।

"तुम वक्त खराब कर रहे हो जी !" उसने दोहराया। "अगर तुम्हें इलाज कराना है तो पानी में उतरो।"

सूदखोर पानी में बढ़ने लगा। वह इतने आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ रहा था कि पानी जब उसके घुटनों तक पहुंचा, तो उसका पेट किनारे पर ही था। आखिर वह पानी में खड़ा हुआ। पानी धीरे-धीरे उसकी कूबड़ तक आ पहुंचा। लेकिन खोजा नसरुद्दीन आगे बढ़ने

के लिए उसे बेरहमी से ललकारता रहा :"आगे बढ़ो...और आगे बढ़ो ! पानी कानों तक पहुंचने लगा। आगे नहीं बढ़ोगे तो मैं तुम्हारे इलाज की जिम्मेदारी नहीं लूंगा। हां, हां, शाबाश ! आगे बढ़ो ! जाफर साहब, जरासी हिम्मत दिखाओ ! हिम्मत करो, हिम्मत ! एक कदम और! जरा और आगे !"

सूदखोर के मुंह से गलगल की आवाज आयी और वह पानी की सतह के नीचे गायब हो गया।

रिश्तेदार चिल्लाने लगे : "डूब रहा है ! अरे वह डूब रहा है।"

हड़बड़ी मच गयी। दरख्तों की शाखें और झाड़ियां डूबते हुए जाफ़र की तरफ बढ़ायी जाने लगीं। कुछ लोग सिर्फ रहमदिल

होने की वजह से उसे बचाना चाहते थे ; कुछ लोग बचाने का महज बहाना कर रहे थे। खोजा नसरुद्दीन उन्हें देखकर ही आसानी से बता सकता था कि उनमें किस पर जाफ़र का कितना कर्ज़ है। वह खुद औरों से ज्यादा दौड़-दौड़कर चिल्ला रहा था और शोर मचा रहा था :"यहां, इधर ! जाफर साहब ! अपना हाथ हमें दीजिए ! सुनिए न ! जरा अपना हाथ इधर बढ़ाइए !"

उसे इस बात का पूरा यकीन था कि सूदखोर अपना हाथ नहीं बढ़ायेगा ! 'दीजिए' का लफ्ज सुनकर ही उसे लकवा मार जाता था।

सभी रिश्तेदार एक साथ चिल्लाए : "दीजिए ! अपना हाथ

इधर दीजिए !"

सूदखोर डूबता और फिर ऊपर आता; हर बार ऊपर आने में उसे पहली बार से ज्यादा देर लगती।

सचमुच उस पाक तालाब में उसकी जिन्दगी खत्म हो गयी होती, अगर तभी खाली मशक पीठ पर लादे, नंगे पैर भागता हुआ एक भिश्ती वहां न आ पहुंचता।

डूबते हुए को देखकर वह चौंककर बोला : "अरे, यह तो सूदखोर जाफर है !"

बिना झिझक, पूरी पोशाक पहने हुए ही वह पानी में कूद पड़ा और हाथ बढ़ाकर चिल्लाया : "यह लो ! मेरा हाथ पकड़ लो !"

सूदखोर ने हाथ थाम लिया और हिफाजत के साथ बाहर निकल आया।

उधर सूदखोर किनारे पर पड़ा होश-हवास दुरुस्त कर रहा था, इधर भिश्ती जोश के साथ उसके रिश्तेदारों को बता रहा था :

"तुम लोग गलत तरीके से उसकी मदद कर रहे थे। बराबर 'लीजिए' 'लीजिए' की जगह 'दीजिए' 'दीजिए' चिल्ला रहे थे। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि एक मर्तबा पहले भी जाफर साहब इसी तालाब में करीब-करीब डूब चुके थे और एक अजनबी ने उन्हें बचाया था जो इधर से एक गधे पर सवार होकर गुजर रहा था ? उस अजनबी ने भी जाफर को बचाने की यही तरकीब की थी और यह तरकीब मुझे याद थी। आज वह जानकारी काम आ

गयी।"

खोजा नसरुद्दीन ने सुना तो अपना होंठ काट लिया। तो उसने दो बार सूदखोर को बचाया था ? एक बार खुद अपने हाथों से और अब भिश्ती के जरिए ? वह सोचने लगा : "खैर, कोई बात नहीं। यह डूबकर रहेगा, यह मेरा जिम्मा है—चाहे इसके लिए मुझे साल भर बुखारा में क्यों न रहना पड़े।"

अब तक सूदखोर के दम में दम आ गया था और वह शिकायत के लहजे में कराह-कराहकर कहने लगा : "अरे, मौलाना हुसैन ! तुमने तो कहा था कि तुम मेरा इलाज करोगे ! लेकिन तुमने तो मुझे डुबा ही दिया था। अल्लाह गवाह है। मैं

कसम खाता हूं कि इस तालाब के सौ कदम करीब भी कभी नहीं आऊंगा ! तुम हो किस तरह के आलिम जो डूबते हुए शख्स को कैसे बचाना चाहिए, यह भी नहीं जानते। यह बात तुम्हें एक मामूली भिश्ती से सीखनी पड़ी ? लाओ मेरा साफा। चलो मौलाना ! अंधेरा हो रहा है और हमें वह काम पूरा करना है जो हमने शुरू किया था। और तुम, भिश्ती, "हफ्ते भर बाद तुम्हें मेरा कर्ज चुकाना है, यह मत भूलना। लेकिन मैं तुम्हें कुछ इनाम देना चाहता हूं और इसलिए मैं तुम्हारा आधा...मेरा मतलब है चौथाई... यानी तुम्हारे कर्ज का दसवां हिस्सा माफ कर दूंगा। यह काफी है हालांकि तुम्हारी मदद के बिना भी मैं आसानी से अपने को बचा सकता था।"

भिश्ती सहमकर बोला : "अरे ओ जाफर साहब ! आप मेरी मदद के बिना नहीं बच सकते थे। क्या आप मेरे कर्ज का एक-चौथाई भी माफ नहीं कर सकते ?"

"आ-हा ! तो तू ने मुझे खुदगरजी से बचाया था?" सूदखोर चिल्लाया। "तू नेक मुसलमान के जज्बे से नहीं बल्कि लालच से मुझे बचाने आया था? इस बात की तो तुझे सजा मिलनी चाहिए ! अब भिश्ती ! मैं कर्ज की एक पाई भी माफ नहीं करूंगा।"

झेंपा और सहमा हुआ भिश्ती आगे बढ़ चला। खोजा नसरुद्दीन रहम से उसको देखता रहा। फिर वह घूमा और नफरत और हिकारत की नजर से जाफर को देखा और भिश्ती की तरफ बढ़ गया।

जाफर ने जल्दबाजी मचायी : "चलो, मौलाना हुसैन ! तुम्हें उस लालची भिश्ती के कान में फुसफुसाने को क्या मिल गया ?"

खोजा नसरुद्दीन ने कहा : "ठहरो ! तुम यह भूल गये हो कि जिस किसी से भी तुम मिलो, उसे सोने का एक सिक्का दोगे। भिश्ती को तुमने अभी तक सिक्का क्यों नहीं दिया ?"

सूदखोर रिरियाने लगा : "लानत है मुझ पर ! ओफ, मैं तो बिलकुल बरबाद हो जाऊंगा ! जरा सोचो तो, मुझे इस लालची और नाचीज भिश्ती तक को सोने का सिक्का देना पड़ेगा ?"

उसने थैली खोली और एक सिक्का निकालकर फेंका : "बस, यह आखिरी मर्तबा है। अब अंधेरा हो गया और वापसी में रास्ते में हमें कोई नहीं मिलेगा।"

लेकिन भिश्ती से फुसफुसाकर खोजा नसरुद्दीन ने बेकार ही बातें नहीं की थीं।

वे वापस रवाना हुए। आगे-आगे सूदखोर, उसके पीछे खोजा नसरुद्दीन था। सबसे पीछे रिश्तेदार चल रहे थे। अभी वे लोग पचास कदम भी न चले होंगे कि एक गली से वही भिश्ती फिर निकला—हां, वही, जिसे इन लोगों ने अभी तालाब के किनारे छोड़ा था।

उसे नजरअन्दाज करने की गरज से सूदखोर मुड़ा, लेकिन खोजा नसरुद्दीन ने डांटा : "जाफर साहब, याद रखो ! हरेक को, जो तुम्हें मिले !"

अंधेरे में तकलीफ भरी कराह सुनायी पड़ी। जाफर थैली खोल

रहा था।

मिश्ती ने सिक्का लिया और रात के अंधेरे में गायब हो गया। वे लोग कोई पचास कदम चले होंगे कि वह फिर उनके सामने आ खड़ा हुआ। सूदखोर पीला पड़ गया और कांपने लगा। बहुत आजिजी से वह बोला:

"मौलाना, यह तो फिर वही..."

बेरहमी से खोजा नसरुद्दीन ने जवाब दिया : "जो भी मिले, हरेक को।"

एक बार फिर एक कराह रात की बन्द हवा में उभरी। जाफर थैली खोल रहा था।

यही हरकत सारे रास्ते होती रही। हर पचास कदम बाद वही

मिश्ती आ खड़ा होता। जाफर हाफ रहा था। परीना उसके चेहरे से टपक रहा था। वह समझ ही नहीं पा रहा था कि यह हो क्या रहा है। सिक्का थमाकर वह सीधा भागता कि आगे सड़क पर झाड़ियों के पीछे से न जाने कहां से निकलकर वही मिश्ती फिर सामने आ खड़ा होता।

अपनी रकम बचाने के लिए सूदखोर ने जल्दी-जल्दी चलना शुरू किया और फिर एकदम दौड़ने लगा। लेकिन वह लंगड़ा था और उस मिश्ती से कैसे टक्कर ले सकता था जो अपनी उमंग में हवा से बातें कर रहा था और बाड़ों व चहारदीवारियों को फांद रहा था। सूदखोर को वह रास्ते में कम से कम पन्द्रह बार मिला।

सूदखोर के घर के बिलकुल नजदीक आखिरी बार वह एक छत से कूदकर सामने आ गया और फाटक में घुसने का रास्ता रोक लिया। आखिरी सिक्का पाकर बेदम होकर वह वहीं जमीन पर गिर पड़ा।

सूदखोर घर के सहन में पहुंचा। खोजा नसरुद्दीन उसके पीछे-पीछे था। जाफर ने अपनी खाली थैली नसरुद्दीन के कदमों पर फेंक दी और गुस्से से चिल्लाया : "मौलाना हुसैन साहब ! मेरा इलाज बहुत महंगा पड़ रहा है ! मैं अब तक सौगात, खैरात और इस नालायक भिश्ती पर तीन हजार टके से ज्यादा खर्च कर चुका हूं !"

खोजा नसरुद्दीन ने हा : "इतमीनान रखो, भाई ! आधे घंटे के

भीतर ही तुम इसका इनाम पाओगे। सहन के बीच खूब बड़ी आग जलाने को कहो।"

इधर नौकर ईंधन ला रहे थे और आग जला रहे थे, उधर खोजा नसरुद्दीन तेजी से कोई ऐसी चाल खोज निकालने के लिए दिमाग दौड़ा रहा था जिससे सूदखोर मात खा जाय और इलाज न हो पाने की जिम्मेदारी उसी पर पड़े। उसने कई तरकीबें सोचीं। लेकिन हर एक को नामुनासिब समझकर तर्क कर दिया। इस बीच आग खूब भड़क उठी थी और हलकी हवा पाकर लपटें ऊंची उठ रही थीं जिससे पास के अंगूर के बगीचे की हरियाली पर लाल रोशनी फैल रही थी।

खोजा नसरुद्दीन बोला, "जाफर साहब ! कपड़े उतारिए और

आग के तीन चक्कर लगाइए !"

कोई ठीक चाल उसकी समझ में अब तक नहीं आयी थी और वह सिर्फ वक्त काट रहा था। वह खयाल में डूबा लग रहा था। रिश्तेदार खामोशी से देख रहे थे। सूदखोर आग के चारों तरफ घूम रहा था, मानो जंजीर से बंधा कोई बनमानुस हाथ हिलाता नाच रहा हो; उसके हाथ करीब-करीब घुटनों तक पहुंचते थे।

खोजा नसरुद्दीन का चेहरा खिल उठा। उसने आराम की सांस ली और कन्धे चौड़ाये। फिर वह बोला : "मुझे एक कम्बल दो ! जाफर और तुम सब लोग यहां आओ !"

रिश्तेदारों को उसने एक गोल घेरे में खड़ा किया और बीच में जमीन पर सूदखोर को बैठाया। फिर उसने उन सब लोगों को

मुखातिब करके कहा : "मैं जाफर को इस कम्बल से ढक दूंगा और दुआ पढ़ूंगा। तुम सब लोग और जाफर भी, आंखें बन्द करके मेरे साथ दुआ दोहराना। जब मैं कम्बल हटाऊंगा, तो जाफर का इलाज पूरा हो चुकेगा। लेकिन एक बहुत जरूरी शर्त है। अगर यह शर्त पूरी न हुई, तो जाफर का इलाज नहीं हो सकेगा। तुम लोग कान लगाकर सुनो कि मैं क्या कहता हूं।"

रिश्तेदार उसके हर लफ्ज को ध्यान से सुनने और उसे याद रखने के लिए खामोश हो गये और पास आ खड़े हुए।

खोजा नसरुद्दीन जोरदार और साफ आवाज में कहने लगा : "मेरे बाद जब तुम दुआ के लफ्ज दोहराओ, तो तुम में से कोई भी बन्दर के बारे में—कम से कम जाफर तो हरगिज ही—नहीं सोचे !

अगर तुम में से किसी ने बन्दर के बारे में सोचा—या इससे भी बदतर, कोई अपने खयाल में भी उसे लाया—उसकी दुम, लाल पिछाड़ी, बदनुमा चेहरा और पीले दांत देखे, तो इलाज नहीं हो सकेगा। ऐसे में इलाज हो भी नहीं सकता क्योंकि किसी भी पाक काम में बन्दर जैसे गन्दे और नापाक जानवर का खयाल ठीक नहीं। तुम लोग समझ रहे हो न ?"

"हम लोग समझ रहे हैं।" रिश्तेदारों ने जवाब दिया।

कम्बल से सूदखोर को ढंकते हुए खोजा नसरुद्दीन ने बड़ी संजीदा आवाज में कहा : "जाफर साहब ! तैयार हो जाइए और अपनी आंखें बन्द कर लीजिए।" फिर रिश्तेदारों की तरफ पलटकर वह बोला : "अब तुम लोग भी अपनी आंखें बन्द कर

लो और मेरी शर्त याद रखो। खबरदार ! बन्दर के बारे में बिलकुल ही न सोचना।"

फिर उसने दुआ पढ़नी शुरू की : रिश्तेदार भी बेमेल आवाज में दुआ दोहराने लगे। यहां खोजा नसरुद्दीन ने एक चेहरे पर कुछ परेशानी और घबराहट देखी। एक दूसरा रिश्तेदार खांसने लगा। तीसरा दुआ के लफ्जों पर अटक गया। चौथे ने सिर हिलाया, मानो आंखों के सामने से कोई नजारा हटा रहा हो।

एक लमहे के बाद ही कम्बल के नीचे जाफर खुद बेचैनी से हिलने लगा। बेहद नफरत पैदा करनेवाला, बहुत बदनुमा, एक बन्दर अपनी लम्बी दुम और पीले दांत दिखाता उसके दिमाग के पर्दे पर आ खड़ा हुआ था और कभी जीभ दिखाकर और कभी

अपनी लाल गोल पिछाड़ी और बदन के वे हिस्से दिखाकर चिढ़ाने लगा जो ऐसे वक्त किसी भी सच्चे मुसलमान के खयाल में आने के काबिल नहीं।

खोजा नसरुद्दीन जोरदार आवाज में दुआ करता रहा। यकायक वह रुक गया, मानो कुछ सुन रहा हो। रिश्तेदार भी खामोश हो गये। कुछ तो पीछे को हट गये।

कम्बल के नीचे जाफर दांत किटकिटा रहा था क्योंकि उसके खयालात में बन्दर बिलकुल खुले तौर पर गन्दी हरकतें करने लगा था।

"काफिरो ! शरारत पसन्दो !" खोजा नसरुद्दीन गरज उठा। "मैंने जो बात मना की थी, उसे करने की मजाल ? उस चीज

का खयाल करते हुए तुम लोग दुआ कैसे कर सके जिसकी मैंने खास तौर पर मनाही की थी ?"

कम्बल फुर्ती से हटाते हुए वह सूदखोर की तरफ झपटा : "तू ने मेरी मदद क्यों मांगी थी ? अब मैं समझ गया कि तू इलाज करवाना ही नहीं चाहता था। तू तो सिर्फ मुझे जलील करना चाहता था। तू मेरे दुश्मनों का साथ दे रहा था ! ऐ जाफर, होशियार ! कल अमीर को सारा माजरा मालूम हो चुकेगा। मैं उन्हें बताऊंगा कि किस तरह दुआ मांगते वक्त तू ने जानबूझकर—काफिराना इरादे से—बन्दर के बारे में सोचा ! और तुम सब लोग भी होशियार हो जाओ ! तुम लोग आसानी से छुटकारा नहीं पाओगे। कुफ्र की जो सजा होती है वह तुम लोग

जानते होगे..." वह घूमा और खटाक से फाटक बंद करता बाहर निकल गया।

थोड़ी देर में चांद निकल आया। सारा शहर हल्की चांदनी में नहा गया। रात को देर तक सूदखोर के घर शोरगुल होता रहा, तकरार होती रही। हर शख्स जोर-जोर से बहस कर रहा था और यह जानने की कोशिश कर रहा था कि बन्दर की बाबत सोचनेवाला पहला शख्स कौन था।

*

आपके जवाब के इन्तजार में - शिवसिंह नयाल
'अलारिपु' बी-6/62, पहली मंजिल, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-110029, दूरभाष : 600327

ज्योति लेजर टाइपसेटिंग
दिल्ली-110092